अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जुलाई-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–तीसरा	जुलाई–2025

शब्द

दाता जी कित्थे गयों — 2

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बंधन — 3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का बोझ कैसे कम कर सकते हैं — 13

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया संदेश

गुरु बिन कौन सहाई — 23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

गुरु का मुख — 30

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

धन्य अजायब — 32

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला –श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 280 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

दाता जी किथे गयों

दाता जी, किथे गयों, प्रीतमा वे, किथे गयों, X 2

1. हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे ला के, X 2
नहीं सी छड्ड जांणा सानूं, मालिया वे,
किथे गयों .....

2. पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दुःखड़े उठांदे, X 2
जे चिर लौणां सी, रखवालिया वे,
किथे गयों .....

3. हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने लावे होर हुण केहड़ा, X 2
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
किथे गयों .....

4. सुण फरियाद 'अजायब' दी आंवीं, आके दुःखियां दा दर्द मिटावीं, X 2
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
किथे गयों .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बंधन

DVD-523(3)

16 जनवरी 1986 हुज़ूर स्वामी जी महाराज की बानी मुम्बई

बँधे तुम गाढ़े बंधन आन।। बँधे तुम गाढ़े बंधन आन।।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हम जीवों को इस संसार से निकालने के लिए आते हैं। वे हमें बताते हैं कि यह दुनिया जिसमें हम बैठे हैं यह काल की नगरी है, यहाँ का साजो-सामान, माता-पिता, बहन-भाई और दुनियावी रिश्तों का ताल्लुक सिर्फ हमारी देह के साथ है। जब मौत आती है तो हमने इन सबको छोड़कर चले जाना है। पता नहीं पहले हमने कितने बेटी-बेटियां बनाएं, कितनों के पति बनें अगर आज वे हमें याद नहीं तो अब वाले कैसे याद रहेंगे।

महात्मा हमें यह नहीं कहते कि आप इन्हें छोड़ दें, इनसे किनारा कर लें बल्कि वे हमें कहते हैं कि आप इनकी असलियत को जरूर समझें और सोच समझकर इनके साथ **बंधन** में बंधे, कहीं ऐसा न हो कि इनके साथ प्यार लगाकर हम इनके ही हो जाएं।

गुरु नानकदेव जी महाराज की एक जीवन घटना है। उनका एक सेवक था, वे आमतौर पर उसके पास जाया करते थे, वह खेती करता था। गुरु नानकदेव जी उसे रोज समझाते कि भले आदमी, अब तेरे बच्चे बड़े हो गए हैं तू नाम जपा कर। उसे फिक्र था कि कहीं बच्चे घर बार खराब न कर दें, उसका बच्चों के साथ बहुत लगाव था।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव ज्यादा दूर जाकर जन्म नहीं लेता, उसी घर में आ जाता है क्योंकि उसका देन-लेन उन्हीं के साथ होता है।'' वह उस घर में बैल बनकर पैदा हुआ, घरवालों ने उससे खूब काम लिया। गुरु नानकदेव जी एक बार फिर आए और उससे कहा

कि अब तो तू मेरी तरफ तवज्जो दे। उसने कहा, ''देखो जी, दूसरा बैल मजबूत नहीं है। मैं सारा दिन जैसे–तैसे बच्चों का काम चला रहा हूँ अगर मैंने आपकी तरफ ख्याल किया तो आप देह छुड़वा देंगे फिर ये बच्चे बैल की वजह से बहुत दुखी होंगे।'' गुरु नानकदेव जी वापिस चले गए, मौत किसी का लिहाज नहीं करती।

आखिर वह उसी घर में कुत्ते की योनि में आया, वह किसी को घर में घुसने नहीं देता था। गुरु नानकदेव जी फिर गए कि अब तो इनका प्यार छोड़ दे। उसने कहा कि ये शाम को सो जाते हैं अगर मैं घर में न होऊं तो चोर चोरी करके ले जाएं। आखिर गुरु नानकदेव जी फिर चले गए।

वह बच्चों के प्यार में बंधा हुआ उसी घर में साँप बन गया। परिवार वाले बाहर खेत गए थे, घर में छोटा पौत्र रोने लगा। वह ममता में बंधा हुआ यह भूल गया कि साँप को देखते ही डंडे मारते हैं। वह बच्चे को चुप कराने के लिए बच्चे के नजदीक आया ही था कि इतनी देर में घरवालों ने दरवाजा खोला तो देखा कि अगर हम न आते तो यह साँप बच्चे को खा जाता। घरवालों ने साँप को डंडे से मार दिया।

उसकी आशा उसी घर में थी, वह वहाँ गंदी नाली का कीड़ा बनकर दुख भोग रहा था। गुरु नानकदेव जी के साथ बाला और मरदाना कहीं जा रहे थे, चलते–चलते गुरु साहब हँसने लगे तो मरदाना ने पूछा, ''महाराज जी, आपके अचानक हँसने का क्या कारण है?'' गुरु साहब ने कहा कि हम फलाने सिख के पास जाया करते थे वह बैल, कुत्ते और सर्प की योनि में से निकलकर आज गंदी नाली का कीड़ा बनकर तड़प रहा है, उसकी संभाल करनी है। गुरु साहब सारे कार्यक्रम छोड़कर वहां पहुँचे और मरदाना से कहा, ''इस गंद को हाथ में भरकर बाहर फैंक, वह कीड़ा यहीं से निकलेगा। जब वह कीड़ा बाहर निकला तो गुरु साहब ने अपनी दया दृष्टि से उसे तारा।

सन्त कहते हैं कि आप इनमें इतना न फँसें कि बार–बार इनमें जन्म लें और मरें। काल ने इस किस्म की रचना रची है कि किसी को पिछले जन्म का ज्ञान ही न हो। मियां–बीवी को यह पता न हो कि हम पिछले जन्म में किस रिश्ते से इकट्ठे थे। ये पशु–पक्षी जो हमारे घर में हैं, उन्हें ये पता नहीं कि ये पहले किस जामें में थे, काल ने सबको भुलाया हुआ है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिनके साथ हमारा पिछले जन्म का देन–लेन अच्छा है, उनके साथ प्यार बन जाता है और जिनके साथ पिछला देन–लेन बिगड़ा होता है, उनके साथ इस जिंदगी में प्यार बना ही नहीं सकते बेशक वे पति–पत्नी के रुप में ही क्यों ने रहें।

मैं कई बार बताया करता हूँ कि हमारे घर में एक कुत्ता रहता था। वह बहुत मजबूत था, हम सबके ऊपर अपना दबदबा रखता था और अच्छी चारपाई पर बैठता था। वह मंगलवार के दिन व्रत रखता था और अपनी रोटी बाहर मिट्टी में दबा देता था। सोचकर देखें कि वह तो जानवर था, उसे कैसे पता चलता था कि आज मंगलवार है और मैंने व्रत रखना है।

मैं कई बार बताया करता हूँ कि जो महात्मा दूसरी मंजिल तक पहुँचे होते हैं, उनमें कमाल की अंतर्यात्मता होती है लेकिन वे श्रापों में ही अपनी कमाई खराब कर जाते हैं। ऐसे महात्मा कभी–कभी चमत्कार दिखा देते हैं लेकिन ये परम सन्तों की दया है कि वे रिद्धि–सिद्धि दिखाने से रोकते हैं।

मेरे पिता ने बाबा बिशनदास जी से बात की कि इस कुत्ते में यह खूबी है कि पता नहीं इसे कौन बताता है, यह आठ दिनों में से मंगलवार का व्रत रखता है, अपनी रोटी बाहर जाकर दबा आता है और हमारे सारे परिवार के ऊपर दबदबा रखता है। अगर कोई आदमी घर में आ जाए या कोई चीज बाहर ले जानी चाहे तो यह फौरन उससे छीन लेता है। बाबा बिशनदास ने मेरे पिता से कहा कि तू पहचानता है यह कौन है? मेरे पिता ने कहा कि यह जानवर है, मैं इसे कैसे पहचानूंगा। बाबा बिशनदास ने कहा

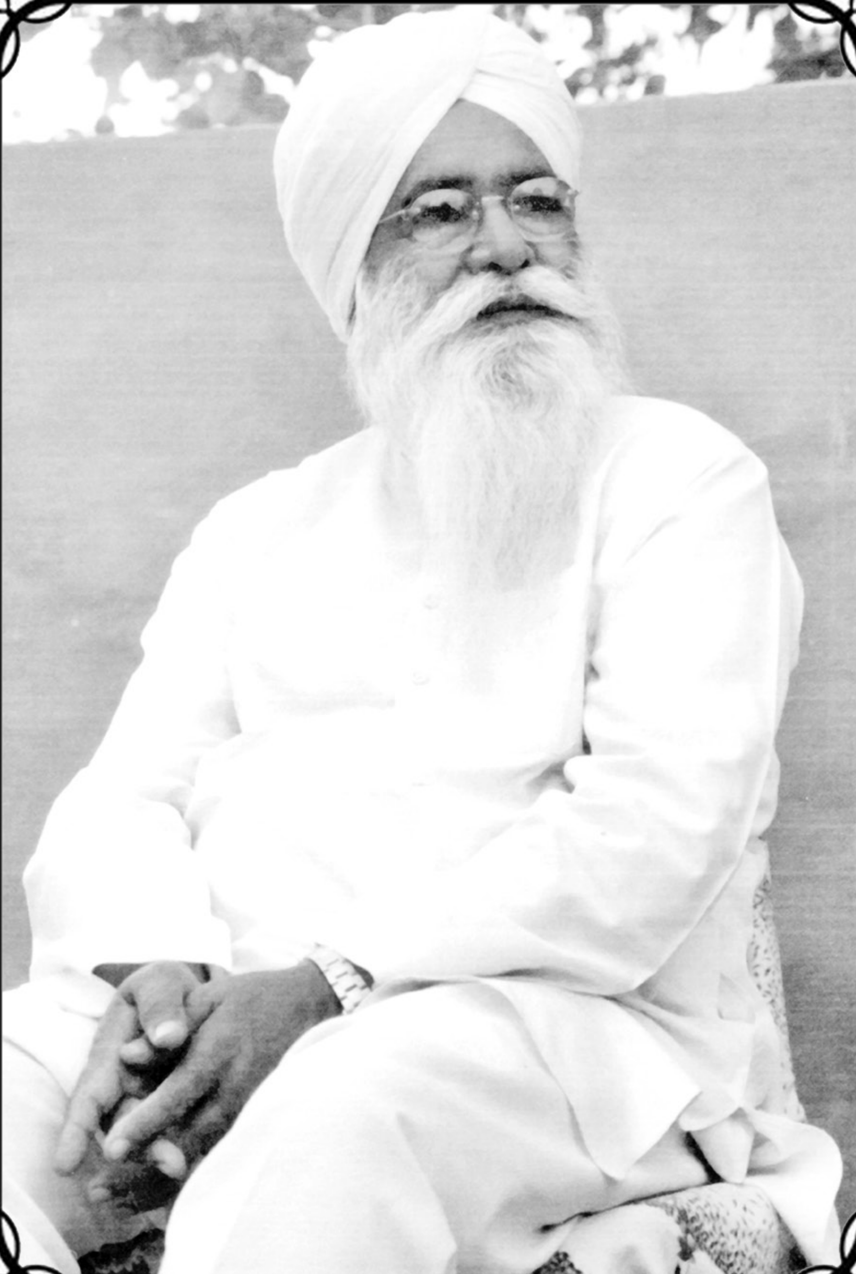

कि यह तेरा पिता है, तू अच्छी तरह देख ले और सोच ले। यह उस मोह के **बंधन** में बंधा हुआ ही घर की रखवाली करता है, किसी को कोई चीज लेकर जाने नहीं देता और बच्चों पर अपना दबदबा रखता है।

उसके बाद मेरे पिता ने उस कुत्ते का अच्छा आदर किया और जब उसकी मौत आई तो जिस तरह इंसानों का रस्मों–रिवाज करते हैं वैसे ही उस कुत्ते का रस्मों–रिवाज किया। पहले मेरे पिता को पता नहीं था कि ये कुत्ता मेरा पिता है और कुत्ते को भी यह पता नहीं था कि ये मुझे क्या समझकर प्यार करते हैं।

पहिले बंधन पड़ा देह का। दूसर तिरिया जान।।

महात्मा हम गफलत की नींद में सोए हुओं को जगाते हैं कि आपने बड़े कठोर **बंधन** बांध लिए हैं। वे उन बंधनों का जिक्र करते हैं कि सबसे पहले हमारी आत्मा को तन के पिंजरे में कैद कर दिया और साथ ही मन लगा दिया। चाहे हम स्वर्गों में हैं या नर्कों में हैं, जहां मन साथ है वहां शान्ति का सवाल ही पैदा नहीं होता। जहां तन है इसे कोई न कोई रोग या समस्या बनी रहती है। कोई न तो तन करके सुखी है और न मन करके सुखी है।

पहले देह का **बंधन** है, दूसरा शादी हो गई पत्नी का बंधन है। पश्चिम में तो मियां–बीवी कमाई करते हैं। आजकल हिन्दुस्तान में पश्चिम की तरह रिवाज आ रहे हैं लेकिन हमारे गाँवो में अभी भी वैसा ही रिवाज है। पति दिन–रात मेहनत करता है, औरत घर में आराम की जिंदगी गुजारती है। पति के जिम्मे ही पत्नी और बच्चों का खर्च है, ये बहुत बड़ा **बंधन** है।

तीसर बंधन पुत्र बिचारो। चौथा नाती मान।।

जब शादी हो जाती है, मियां–बीवी इकट्ठे हो जाते हैं तो कुदरती हमारे अंदर ख्वाहिश पैदा हो जाती है कि कोई बच्चा हो जाए। बच्चा हो जाता है तो उसका पालन–पोषण करना है, उसे पढ़ाना–लिखाना है, यह भी

बंधन है। बच्चा जवान हो जाता है तो ख्याल आता है कि इसकी भी शादी हो जाए, जब शादी हो जाती है तो फिर कहता है कि पौत्र ही हो जाए।

नाती के कहिं नाती होवे। फिर कहो कौन ठिकान।।

जब पौत्र के बच्चा हो जाता है तो कौन सा ठिकाना है? बाबा सबके साथ मोह में बँधकर उन्हीं का रूप हो जाता है, उनके साथ ही बंध जाता है।

धन सम्पत्ति और हाट हवेली। यह बंधन क्या करूँ बखान।।

अंदर से ही चाह पैदा होती है कि मेरा अच्छा मकान हो, मेरे पास सबसे ज्यादा धन हो बेशक दुनिया भूखी मर जाए। भले ही दूसरे को झोपड़ी न मिले लेकिन मेरा मकान अच्छा हो, यह भी **बंधन** है। रोज-रोज इस बंधन में फँसता है। जो यह माँगता है कुदरत इसे देती है।

चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी। बाँध लिया अब बहु बिधि तान।।
कैसे छूटन होय तुम्हारा। गहरे खूँटे गड़े निदान।।

जैसे कोई लम्बा मजबूत रस्सा है अगर हम उसे पाँच-छह लड़ा कर लें तो वह और भी मजबूत हो जाता है। जब हमने अपने आपको ऐसे मजबूत **बंधन** में बाँध लिया तो कोई मालिक का प्यारा ही दया करके ले जाए तो ले जाए, नहीं तो हम इन बंधनों से कैसे छूट सकते हैं।

मरे बिना तुम छूटो नाहीं। जीते जी तुम सुनो न कान।।

अब आप कहते हैं कि इन परिवारों, बच्चे-बच्चियों, कौमों-मजहबों में फँसा हुआ इंसान मरे बिना छूट नहीं सकता। सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप जीते जी इनसे प्यार कम करें और नाम के साथ प्यार करें, इनसे बचें। इनकी असलियत समझकर इनके बीच में रहें अगर परमात्मा ने आपको ये चीजें सेवा के लिए दी हैं तो आप इनसे सेवा लें न कि इनके ही सेवादार बनकर रह जाएं।

जगत लाज और कुल मरजादा। यह बंधन सब ऊपर ठान।।

आप कहते हैं कि सबसे बड़ा **बंधन** लोक लाज और कुल की मर्यादा का है क्योंकि हम आमतौर पर बिरादरी वालों से डरते हुए महात्मा से नाम नहीं लेते। कुल की रीति की वजह से भी हम सन्तों के पास जाकर नाम नहीं लेते कि ये हमें क्या कहेंगे कि सन्त इनकी जाति का नहीं है या इनके दुनियावी धर्म में पैदा नहीं हुआ।

लीक पुरानी कभी न छोड़ो। जो छोड़ो तो जग की हान।।

अब आप कहते हैं कि हमारी कुल और समाज में जो पुराने रस्मों-रिवाज हो रहे हैं, हम उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते अगर कोई उस रीति-रिवाज से स्वतंत्र होना चाहता है तो लोग उसकी निन्दा-चुगली करते हैं, ताने देते हैं कि इसके पिता और दादा ये रस्मों-रिवाज करते रहे हैं, ये आज इन रस्मों-रिवाज को छोड़ गए हैं। हम लोगों के तानों-महणों से डरते हुए भी रीति-रिवाज नहीं छोड़ सकते।

क्या क्या कहूं बिपत मैं तुम्हरी। भटको जोनी भूत मसान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सन्त आपकी विपता को देखते हैं तो रूह काँपती है, आप कहाँ-कहाँ जाकर विपता भोगते हैं। आपको कब्रों में या श्मशान भूमि में भूत बनकर रहना पड़ता है जहाँ कोई मकान नहीं होता, अच्छा खाना खाने के लिए नहीं मिलता और जगह अच्छी नहीं होती। आपको कीड़े, पतंगे और पक्षियों की योनियों में भी जाना पड़ता है। ये सजाएं इसलिए मिलती हैं कि इंसानी जामें को बेफायदा खो दिया, इसकी कद्र नहीं की और इसमें बैठकर 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की।

तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा। क्योंकर पावो नाम निशान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अफसोस है! हम अपनी आँखों से देखते हैं कि हमारे साथी हमारा साथ छोड़ जाते हैं। माता पुत्रों को देखते-देखते चली जाती है। पुत्र माता को देखते-देखते चले जाते हैं फिर भी हमारे कान पर जूं तक नहीं रेंगती। हम कहते हैं कि मौत उसके लिए थी हमारे लिए नहीं। हम सोचते हैं कि हमने सदा ही यहाँ रहना है, ये दो दिन की मेहमानी है, पता नहीं कब आवाज पड़ जाएगी।

कबीर साहब कहते हैं कि जिस तरह पानी पर हवा पड़ने से बुलबुला बन जाता है, हवा निकल जाने पर बुलबुला समाप्त हो जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जो पैदा हुआ है उसने एक दिन जरूर मर जाना है। सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्नी तू जणिओहि।
तै पासहु ओइ लदि गए तूँ अजै न पतीणोहि।।

जब आत्मा माता के पेट में प्रवेश करती है तो सबसे पहले मौत का वक्त निश्चित होता है। हम कष्ट इसलिए उठाते हैं क्योंकि हम उस वक्त को भूले बैठे हैं जो हमारे ऊपर जरूर आना है। हम जग को अपना बनाने में लगे हुए हैं। नाम की तरफ तो हम कभी भूले भटके भी नहीं आए तो किस तरह हमारे अंदर नाम प्रकट हो जाए।

बेड़ी तौक हथकड़ी बाँधे। काल कोठरी कष्ट समान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि इसे तो किसी ने फँसाया हुआ नहीं यह खुद ही फँसा हुआ है। जिस तरह किसी बदमाश को हथकड़ियां, बेड़ियां और गले में फंदा डालकर काल कोठरी में बंद कर देते हैं। यह तो एक दुनियावी सजा है लेकिन इससे ज्यादा कष्ट वाली सजा वह है जो इसे माता के पेट में नौं महीने हर मौत और पैदाईश से पहले जाना पड़ता है, यह उसे भुलाकर बैठा है।

काल दुष्ट तुम बहु बिधि बाँधा। तुम खुश होके रहो गलतान।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सन्त इस संसार में आकर बहुत कष्ट उठाकर संदेश देते हैं कि आपको काल ने विपता में डाला हुआ है। यह नहीं कह सकते कि मौत–पैदाइश की इस विपता में फँसे हुए हमें कितने युग हो गए हैं। न पशु के जामें में सुखी हैं न पक्षी के जामें में सुखी हैं और तो और सारी सृष्टि का सरदार इंसान ही सुखी नहीं है तो फिर कौन सुखी हो सकता है। ऐसे ही एक दूसरे का पर्दा है। हम कह देते हैं कि शायद यह सुखी होगा। जब किसी को एक तरफ ले जाकर पूछते हैं तो वह दुखों से भरा हुआ होता है। सारे दुखों की गठरी खोलकर रख देता है तो पता चलता है कि इससे ज्यादा कौन दुखी हो सकता है।

ऐसे मूरख दुख सुख जाना। क्या कहूं अजब सुजान।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि कोई मूर्ख ही होगा जो सारा दिन तो आग में खड़ा होकर दो मिनट पानी में खड़े होने का सुख माने। हमने यह सब मंजूर किया हुआ है इसलिए स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप बेसमझ हैं, आपको पता नहीं आप काल की नगरी में दुखों को सुख समझकर भोगने में लगे हुए हैं और उन्हीं में मस्त हैं।

शरम करो कुछ लज्या ठानो। नहिं जमपुर का भोगो डान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अब तो शर्म करें, इंसान में बुद्धि रखी है। आपको अच्छे बुरे का ज्ञान होना चाहिए जो काम इससे पहले की योनियों में नहीं कर सकते थे वह काम इंसान बनकर कर सकते हैं, वह काम 'शब्द–नाम' की कमाई है। वापिस अपनी आत्मा को वहां पहुँचाना है जहाँ से यह शुरु में आई थी। आप छोटे–छोटे घरों और कौमों के पीछे लड़ते हो, आपका असली घर सच्चखंड है और असली कौम सतनाम है। कभी–कभी उसके पीछे भी संघर्ष करें।

राधास्वामी सरन गहो अब। तौ कुछ पाओ उनसे दान।।

अब हमारा फर्ज बनता है कि 'शब्द–नाम' की कमाई करें। शब्द नाम की कमाई करेंगे तभी हम उस परमात्मा से मिल सकते हैं। **महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप जिसे याद करते हैं, पुकारते हैं वह आपको जरूर मिलेगा। कुदरत का उसूल है कि भूखे को रोटी और प्यासे को पानी जरूर देती है।'' अगर अब हम परमात्मा के आगे फरियाद करेंगे कि हम फिर–फिर के थक चुके हैं, अब हमें अपनी भक्ति और नाम का दान बक्शें। वे जरूर दया–मेहर करके हमें अपने चरणों में जगह देते हैं, अपनी भक्ति बक्शते हैं।**

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का बोझ कैसे कम कर सकते हैं

03 जनवरी 1990 DVD-610(2) 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

*एक प्रेमीः– क्या यह सोचना गलती है कि हम अपनी छोटी–छोटी शिकायतें जिन्हें हम अपने आप बर्दाश्त कर सकते हैं अगर हम वे शिकायतें गुरु से न करें तो हम **गुरु का बोझ कम कर सकते हैं**?*

बाबा जीः–हाँ भई, बड़ा अच्छा सवाल है, गौर से समझने वाला है। आप सब इसे प्यार से समझने की कोशिश करें। इससे पहले जब सवाल–जवाब हुए थे तो उसमें काफी आदमियों ने इंटरव्यू में बताया कि हमारे सवालों के जवाब सतसंग में ही मिल गए थे। मैं आशा करता हूँ कि यह सवाल भी बहुत गहराई में जाकर सोचने वाला है, गौर से सुनें।

आपको पता ही है कि हम जिस काल के राज्य में आए हैं यहाँ माफी नहीं बदला है, जो जैसा करता है वैसा भरता है। जो लूले–लंगड़े या अंधे–काने होते हैं या जिन्हें जन्म से ही बहुत सारे रोग लगे होते हैं, उन आत्माओं के ऐसे ही कर्म होते हैं जिन्हें भोगने के लिए वे फिर संसार में आते हैं। उनमें से ऐसे भी जीव होते हैं जिन्होंने कई जन्मों में ऐसे कर्म किए होते हैं कि उनकी किस्मत में प्रभु नाम और पूरे गुरु के दर्शन लिख देते हैं।

जब मैं कोलम्बिया गया, वहाँ मुझे बहुत सी ऐसी आत्माएं देखने को मिली जो अपने आप चल नहीं सकती थी, अपने आप खाना नहीं खा सकती थी। डॉ. डूके के संपर्क में काफी प्रेमी थे जिनके वारिस नामलेवा नहीं थे, उनका कोई ऐसा कर्म था कि उनकी किस्मत में सन्तों के दर्शन लिखे थे।

जो भी महान आत्मा सन्त–सतगुरु 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं, वे शब्द–रूप हो जाते हैं। गुरु साहब कहते हैं**:**

हरि का सेवकु सो हरि जेहा, भेदु न जाणहु माणस देहा।।

उनके और परमात्मा के बीच कोई फर्क नहीं होता उन महात्माओं का परमात्मा के साथ ऐसा रिश्ता होता है जैसे जल में बुलबुले उठते हैं और जल में ही समा जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जेल खाने में कैदी भी होते हैं और सुपरिंटेंडेंट भी होते हैं, दोनों ही इंसान होते हैं लेकिन दोनों की ड्यूटी में बहुत फर्क होता है। कैदी सजा भोगते हैं और सुपरिंटेंडेंट आजाद होता है।'' इसी तरह डॉक्टर और मरीज है दोनों इंसान की शक्ल रखते हैं। मरीज दुख और कष्ट से पीड़ित होता है, वह अस्पताल में डॉक्टर के पास जाता है लेकिन डॉक्टर को दर्द नहीं होता।

इसी तरह पढ़े–लिखे और अनपढ़ का फर्क होता है। अनपढ़ को कोई समझ नहीं होती अपने आपका ज्ञान नहीं होता लेकिन पढ़ा–लिखा अपनी अच्छी जिंदगी व्यतीत करता है, देखने में तो दोनों ही इंसान हैं। जिस तरह जज बाजार में चलता–फिरता है तो हमें उसकी हस्ती का ज्ञान नहीं होता लेकिन जब वह कुर्सी पर बैठता है तो हमें उसकी हस्ती का ज्ञान होता है।

इसी तरह महात्मा भी संसार में इंसान की शक्ल लेकर आते हैं अगर परमात्मा अपने प्यारों को गाय या भैंस के रूप में भेज दें तो हम उनकी बोली नहीं समझ सकते अगर परमात्मा देवी–देवता के रूप में आऐं तो हम उन्हें देख नहीं सकते। इंसान का टीचर केवल इंसान ही हो सकता है इसलिए प्रभु हम इंसानों के बीच इंसान बनकर आ जाते हैं।

हम जीवों के अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लहरें उठ रही हैं। हमारा जीवन अंदर से अशांत होता है लेकिन मालिक के प्यारों का जीवन अंदर से शांत होता है, वे मालिक के साथ जुड़े होते हैं, उनमें विवेक बुद्धि होती है। सच्चाई यह है कि ऐसी महान आत्माएं ही अपने गुरु का बोझ हल्का करती हैं और बाद में वही अपने गुरु का मिशन चलाती हैं।

जहाँ मैं यह कहता हूँ कि सन्तों का दर्शन शिष्य को ऊँचे भाग्य से मिलता है वहां मैं यह भी बताया करता हूँ कि गुरु को भी अच्छा शिष्य बड़े ऊँचे भाग्य से मिलता है। ज़िन्दगी में किसी महात्मा को ऐसा अच्छा शिष्य मिलता है और कई शिष्य अच्छा शिष्य बनने की तैयारी करने में ही समय लगा जाते हैं।

आप ऐसे महात्मा का जीवन पढ़कर देखें बेशक गुरु उन्हें काफी अरसा बाद मिले क्योंकि उनका समय नहीं आया था लेकिन उनकी खोज बचपन से ही ज़ारी रहती है। बचपन से ही उनका लक्ष्य आँखें बंद करके बैठना होता है, वे लोग बचपन से ही अपने शरीर की बहुत अच्छी तरह संभाल करते हैं, इसे दुनिया के विषय-विकारों में गंदा नहीं करते। उन्हें पता होता है कि इसके अंदर उस मालिक ने बैठना है। ऐसी महान आत्मा का ख्याल बचपन से ही प्रभु की तलाश में होता है।

आप गुरु नानक देव जी और दस गुरुओं का इतिहास पढ़कर देखें कि उन्होंने कितनी मशक्कत झेली, वे कितनी देर तक खोजते रहे। गुरु से मिलकर भी उन्होंने बहुत सख्त मेहनत की। गुरु नानकदेव जी अच्छे खानदान में पैदा हुए थे। उनमें बचपन से ही लगन थी, उन्होंने ग्यारह साल पत्थरों का बिछोना किया, क्या उन्हें अच्छे बिस्तर नहीं मिलते थे?

हमें महाराज सावन सिंह जी का जीवन पढ़ने को मिलता है, वे अच्छे खानदान में पैदा हुए। उन्हें अच्छी नौकरी मिली, उन्होंने नौकरी का अच्छा कारोबार किया और दुनियादारी का कारोबार भी किया लेकिन अंदर खोज थी, वे बाईस साल तक खोजते रहे। वे आम साधु-सन्तों की तलाश करते रहे। इसी तरह जब उन्हें बाबा जयमल सिंह जी मिले तब उन्होंने ऐसा नहीं किया कि रास्ता पूछ लिया और फिर बैठ गए। उन्होंने बहुत सख्त मेहनत की। कई-कई दिन अंदर से नहीं निकलते थे, पूरा खाना नहीं खाते थे। अगर उनसे पूछते कि क्या आपने कमाई की है तो वे कहते, ''नहीं भाई,

बाबा जयमल सिंह जी की ही दया मेहर थी, मैंने कुछ नहीं किया।'' एक बार वे ऐसे ही बात कर रहे थे कि उनका रसोइया भाई बंता सिंह कहने लगा, ''महाराज जी, मैं आपका खाना तैयार करता रहा हूँ, आप सारी–सारी रात कमाई करते थे, खाना नहीं खाते थे क्या वह कमाई नहीं थी?'' जब उन्हें नींद गिराती तो वे खड़े होकर बैरागन पर अपना अभ्यास करते थे।

इसी तरह महाराज कृपाल को बचपन से ही रिद्धि–सिद्धि हासिल थी, लेकिन वे रिद्धियों–सिद्धियों से काम नहीं लेते थे, वे कहते थे कि तुम मुझसे दूर ही रहो। एक बार वे अस्पताल गए वहाँ पर उनके दुनियावी चाचाजी बीमार थे। वे जितना सामान अपने चाचाजी के लिए ले जाते थे उतना ही दूसरे मरीज़ के लिए भी ले जाते थे। हम दुनियादार लोग तंगदिल होते हैं इसलिए उनके चाचाजी कहने लगे, ''भई पाल, मैं तो तेरा चाचा लगता हूँ, मेरा तेरे ऊपर हक़ है, इसका क्या हक़ है जो इसके लिए भी उतना ही सामान लाता है?'' महाराज जी ने कहा, ''चाचाजी, इसका भी मेरे ऊपर उतना ही हक़ है।''

महाराज कृपाल मिलिट्री में डिप्टी अकाउंट अफसर थे, उस समय वे रात को लाहौर स्टेशन पर बूढ़े लोगों का सामान ढोया करते थे। वे कहा करते थे, ''मुझे दरिया की सैर करने की बहुत आदत थी। एक बार वे लाहौर से चले कि ब्यास दरिया की भी सैर कर आएं। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने वहाँ के स्टेशन मास्टर से पूछा कि यहाँ से दरिया को कौन सा रास्ता सा जाता है? स्टेशन मास्टर ने कहा, ''क्या आपने डेरे जाना है?'' महाराज जी ने पूछा, ''यहाँ कोई डेरा भी है?'' स्टेशन मास्टर ने कहा, ''हाँ, यहाँ सन्त हैं।'' महाराज जी ने सोचा कि चलो एक पंथ दो काज, दरिया की सैर भी हो जाएगी और सन्तों के दर्शन भी हो जाएंगे।

महाराज कृपाल को महाराज सावन सिंह जी सात साल पहले अंदर मिलते थे, जब उन्होंने देखा कि ये वही महात्मा हैं तो महाराज कृपाल ने

कहा, ''आपने बाहरी मिलाप में इतना समय क्यों लगाया?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''परमात्मा को यही वक्त मंजूर था।'' महाराज कृपाल सिंह ने उसी समय अपने भाई जोधसिंह को तार भेजी कि मुझे पूरे गुरु मिल गए हैं, मेरी दूसरी तार का इंतज़ार करें।

प्यारेयो, ऐसी महान आत्मा कभी सोच भी नहीं सकती कि हम गुरु का बोझ उठा लेंगे क्योंकि गुरु का बोझ उठाना बहुत मुश्किल होता है, गुरु ही महान होते हैं जो यह बोझ उठा सकते हैं। गुरु अंगद देव जी को जब नामदान देने का हुक्म दिया तो वे कहने लगे, ''गठरी भारी है, मैं उठा नहीं सकता।'' ऐसी महान आत्मा अपने गुरु के हुक्म को मना नहीं कर सकती लेकिन अपने गुरु के आगे मिन्नतें करती हैं कि आप यहां बैठे रहें और हम आपकी छत्र-छाया में रहें।

मेरे बारे में आप आम सतसंग में सुनते हैं कि मैं अपनी माता को काफी प्यारा था। वह मुझे बहुत अच्छे बिस्तर पर सुलाती थी लेकिन मैं कहीं न कहीं से एक बोरी ढूंढ लेता था। उसे नीचे बिछाकर बैठ जाता था। कई बार वह रात को आकर मुझे पकड़ लेती थी और नाराज़ होती थी कि तू चारपाई पर क्यों नहीं सोता। तू छोटा-सा लड़का है, भजन बुज़ुर्ग करते हैं, तू अभी से क्यों भजन करने लग गया है।

प्यारेयो, मैं नींद के बारे में बताया करता हूँ कि मेरी विरासत में सुबह का सोना लिखा ही नहीं था। मैंने इसलिए भक्ति नहीं की थी और भूख-प्यास नहीं काटी थी कि मेरे गुरु मेरे जिम्मे इतना बड़ा काम लगा देंगे जिसे करते हुए दिल कांपता है लेकिन यह काम करना ऐसी महान आत्मा के ज़िम्मे लगा दिया जाता है। मैंने तो भक्ति इसलिए की थी, अपना आप उन पर अर्पण किया था कि जब भगवान मिल जाएं तो बस उनके चरणों में अपना प्यार लगाए रखूं।

प्यारेयो, मैं कहा करता हूँ कि गुरु सबको लेकर जाते हैं क्योंकि जिन्हें नाम दिया है, वे उनके ज़िम्मेदार बन जाते हैं, वे बड़े दयालु होते हैं। मैं बताया करता हूँ कि जब उन्होंने गंगानगर मुझे अपने साथ कार में बिठाया तो मैं बैठना नहीं चाहता था क्योंकि वे सारी रात प्रेमियों से मिल रहे थे, थके हुए थे। मैं चाहता था कि मैं अपनी जीप में जाऊँ पर उन्होंने मुझे गले लगाकर कहा, ''मुझे कोई ख़ास काम है, तू मेरे साथ ही बैठ।''

मैं जैसे ही बैठा, उन्होंने अपने गुरुदेव की अंत समय की बातें शुरू कर दी, जिस समय उन पर यह ज़िम्मेदारी डाली गई थी। मेरा शरीर और दिल कांप रहे थे। जब उन्होंने यह लफ़्ज़ बोले कि कई कारण थे जो मैं महाराज सावन सिंह जी के कहे हुए को मना नहीं कर सका लेकिन मेरी अर्ज थी कि आप तख़्त पर बैठें, आप सुन्दर लगते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''देख कृपाल सिंह, थ्योरी समझाने वाले तो जगह-जगह तैयार होंगे। गुरु बनने की सबको लालसा लगी होती है लेकिन नाम तवज्जो होती है, कहीं मेरी तालीम गुम न हो जाए।'' मैंने उनसे कहा, ''महाराज जी, आप कैसी बातें कर रहे हैं? आज आपके ख्याल कैसे हो रहे हैं?'' महाराज कृपाल सिंह जी ने कहा, ''हाँ, भविष्य में ये बातें तेरे काम आएंगी, मैं तुझे ही बताना चाहता था।''

सतसंगी के लिए सतगुरु दया के पुंज होते हैं। वे हम शराबी-कबाबियों, विषय-विकारों में सड़ते हुए जीवों को नाम ज़रूर दे देते हैं। 'शब्द-रूप' होकर हमारे अंदर बैठ जाते हैं और संभाल भी करते हैं क्योंकि उन्हें अपने बिरद की लाज होती है। आप जानते ही हैं कि काल अपने एजेंट मन को हमारे पीछे लगाकर रखता है। कहीं यह मान-बड़ाई और पदवी का ख्याल पैदा करता है तो कहीं यह किसी और कारोबार में फंसा देता है। यह सन्तों के पास जाने में बहुत रुकावटें डालता है।

हम रोज मंदिर, मस्जिद और चर्च में नाम की महिमा सुनते हैं कि नाम के बिना मुक्ति नहीं लेकिन नाम लेते समय भी यह हमारे अंदर खलबली पैदा कर देता है। काल बाईं तरफ बैठा है और 'शब्द-रूप' गुरु आपके दाईं तरफ बैठे हैं। जब कोई सतसंगी बुरे कर्म करता है तो काल उसी वक्त कह देता है कि देख, तूने इसे नाम दिया है, इसकी करतूत देख, क्या यह नाम के काबिल है? माता-पिता के सामने अगर कोई उनके बच्चे की बुराई करे कि यह अच्छा नहीं है तो हम दुनियादारों को भी बुरा लगता है। हम उसके साथ मरने-मारने के लिए तैयार हो जाते हैं।

आप सोचकर देखें, कर्म ये जीव करते हैं लेकिन उसकी बेइज्जती गुरु को उठानी पड़ती है। गुरु फिर भी भरोसे, प्यार और श्रद्धा वाले होते हैं। वे कहते हैं कि यह ज़रूर सुधर जाएगा, मैं इसे सुधार लूँगा, यह ठीक हो जाएगा। जो प्रेमी यह कहते हैं कि हम फैसला नहीं कर सकते कि यह ख्याल गुरु की तरफ से है या मन की तरफ से है, उन्हें यह सोच लेना चाहिए कि जो भी बुराई का ख्याल आएगा, बुराई की तरफ प्रेरणा देगा, वे ख्याल मन और काल की तरफ से होते हैं। जब नेक ख्याल उठते हैं, वे गुरु की तरफ से होते हैं।

जब हमारे मन में नेक ख्याल उठते हैं, उस समय हमें भजन पर बैठना चाहिए, उस मौके का फ़ायदा उठाना चाहिए क्योंकि उस वक्त आत्मा का झुकाव प्रभु की तरफ होता है। सतसंगी के लिए तो इतना ही काफी है, यह भी गुरु के साथ एक सहयोग ही होता है कि हम दुनियावी मसले गुरु के ऊपर न डालें, गुरु के ऊपर बोझ न बनें। गुरु साहब कहते हैं:

पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै।

काल के साथ हमारा पिछला हिसाब-किताब गुरु अपने हाथ में ले लेते हैं। कर्म चाहे सतसंगी भोगे चाहे गुरु भोगे, काल माफ़ नहीं करता। यह काल की मर्जी है कि वह सन्तों से आँख ले, चाहे उनकी टांग ले, चाहे

उन्हें बुखार चढ़ाए, चाहे उन्हें दस्त लगाए। चाहे कोई भी बीमारी या कष्ट दे सन्त उसे ख़ुशी–ख़ुशी स्वीकार कर लेते हैं।

महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने का जो हुक्म दिया था, वह इसी बीमारी की दवाई है। सतसंगी जब नाम ले लेता है तो उसके बाद उसे और कर्म नहीं बनाने चाहिए, गुरु पर और बोझ नहीं डालना चाहिए। भजन करना चाहिए, अपने आपको सुधारना चाहिए, डायरी के मुताबिक अपना जीवन बनाना चाहिए।

सन्त हर प्रकार के कर्मों से आज़ाद होते हैं लेकिन जो भी सन्त देह रूप में आते हैं, उन्हें उसका भुगतान करना पड़ता है। पराई आग में सिर्फ गुरु ही सड़ते हैं। प्यारेयो, कौन पराए कर्म उठाता है? महाराज सावन सिंह जी किसी प्रेमी का कर्म उठाकर बीमार हुए। उन्हें कोई होश नहीं थी, नीचे का सांस नीचे और ऊपर का साँस ऊपर था। उस समय वहाँ जो सतसंगी अभाव लेकर खड़ा था महाराज जी ने उसी का कर्म उठाया था। उसने कहा, ''महाराज जी, क्या यह आपका अपना कर्म है या किसी और का है?'' महाराज सावन ने हंसकर कहा, ''यह मेरे किसी प्यारे का कर्म है।''

ऐसा ही मौका बाबा जयमल सिंह जी के वक्त में भी आया था। उनका एक सतसंगी मोती राम अम्बाला में टेलर का काम करता था। उस समय संगत थोड़ी थी। वह उनसे अम्बाला में सतसंग करने की आज्ञा ले आया कि आप हमारे पास एक महीना ठहरें। बाबा जयमल सिंह जी अम्बाला चले गए। वहां एक बहुत ऊँचे ओहदे वाला सरदार हुक्म सिंह सतसंग में आने लगा। दो दिन हुए थे, मोती राम के दिल में ख्याल आया अगर हुक्म सिंह इस तरफ लग जाए तो सतसंग की अच्छी शोभा बन जाएगी। इसकी वजह से और लोग भी नाम ले लेंगे क्योंकि हमारे सतसंगियों में यह ख्वाहिश होती है कि ज्यादा लोग सतसंगी बन जाए। जैसे हमारा फ़ायदा हुआ है, इनका फायदा भी हो जाए।

मोतीराम ने हुक्म सिंह को बाबा जी के सामने पेश किया कि आप इसे नाम दें। बाबा जी ने कहा , ''आप चाहे दो सौ लोगों को नाम दिलवा दें लेकिन इसे नाम न दिलवाएं।'' मोतीराम ने कहा, ''आप इसे ज़रूर ही नाम दें।'' बाबा जी ने कहा कि मैं इसे सिर्फ एक शर्त पर नाम दे सकता हूँ कि आप मेरे लिए टांगा मँगवाकर मेरा बिस्तर उस पर रख दें फिर मैं इसे नाम दे दूँगा। बाबा जी के लिए टांगा मंगवा लिया और उसमें बिस्तर रख दिया लेकिन मोती राम ने फिर भी जिद्द की और उसे नाम दिलवा दिया। बाबा जी बहुत जल्दी वापिस अपने डेरे पहुंचे।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि बाबा जयमल सिंह जी उन्हें लुधियाना में मिले, मैंने उन्हें नमस्कार किया। वे कहा करते थे कि हमें जब भी छुट्टी मिलती, हम डेरे चले जाते थे और बाबाजी गुस्सा होते थे कि आप अपने घर के काम नहीं करते डेरे भाग आते हैं। उन्होंने बाबा जयमल सिंह जी से कहा कि मैं इस हफ्ते डेरे आना चाहता हूं। बाबा जी ने कहा, ''नहीं, इस हफ्ते मत आना, अगला हफ्ता छोड़कर फिर आना।''

जब महाराज सावन सिंह जी वहां गए तो बाबा जयमल सिंह जी की शक्ल बिल्कुल पीली पड़ी हुई थी। पंद्रह दिन तक इतना बुखार आया जिसका कोई हिसाब नहीं था, बाबाजी ने कोई दवाई भी नहीं ली। फिर अमृतसर से एक प्रेमी डॉक्टर को बुलाया गया। बाबा जी ने बीबी रूक्को को बताया कि यह किस तरह का कर्म उठाया गया।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''महाराज जी, आपने मुझे डेरे क्यों नहीं आने दिया? मैं आपके दुःख-सुख में सहाई होता, आपकी सेवा करता।'' वे कहने लगे, ''देख भई, तू अभाव ले आता कि सन्तों की भी यह हालत, तुमसे यह बात सहन नहीं होती।'' एक दिन महाराज सावन सिंह जी ने प्यार में बाबा जयमल सिंह जी से पूछा, ''बाबाजी, यह किसका कर्म था?'' उन्होंने कहा कि तुझे हज़म नहीं होगा। महाराज सावन सिंह

ने कहा कि मैंने वादा किया था कि जब तक आप देह रूप में हैं, मैं किसी के पास इस बात का जिक्र नहीं करूंगा। आज बाबा जी शरीर करके यहां नहीं हैं इसलिए मैं यह बात बता रहा हूँ।

कहने का भाव यह है कि प्यारेयो, नाम देना आसान नहीं होता, यह दूसरे के कर्म उठाने होते हैं। सतसंगियों के लिए तो बस इतना ही है कि जब नाम मिल गया तो जहाँ खड़े हैं, उससे आगे अपने कदम बुराई की ओर न जाने दें। रोज़ नाम का अभ्यास करें, हम जो रोज़-रोज़ अभ्यास करते हैं, यही हम अपने गुरु के मिशन में उनकी मदद कर रहे होते हैं।

प्यारेयो, सन्त कभी किसी को एहसास नहीं करवाते कि हमने तेरा कर्म उठाया है या उसका कर्म उठाया है। वे अपने में से धुआं तक नहीं निकलने देते, सब्र के साथ ही अपने गुरु के आगे पेश आते हैं। ऐसी कहानियों से ग्रन्थ भरे पड़े हैं कि किस तरह महात्मा ने देह में आकर जीवों के फायदे किए। कहने को और भी बहुत कुछ है लेकिन टाईम हो गया है। आशा करते हैं कि सब प्रेमी इसी को समझने की कोशिश करें। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को गुफा दर्शनों से पहले दिया संदेश

गुरु बिन कौन सहाई

03 नवम्बर 1990 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

इस जगह के बारे में आप काफी कुछ सन्त बानी मैगजीन में पढ़ चुके हैं। इस जगह की महानता यही है कि किसी ग़रीब आत्मा ने गुरु का हुक्म माना। जो कुछ गुरुदेव चाहते थे, उनकी इच्छा के मुताबिक़ अपनी जिंदगी को ढाला और भजन-सिमरन किया। गुरु और शिष्य की कहानी नई नहीं है, जब से दुनिया बनी है यह तभी से चली आ रही है।

यह परमात्मा का ही कानून है कि जिसने मुझसे मिलना है, सबसे पहले वह पूरे गुरु जो मुझसे मिल चुके हैं और मेरे साथ एक हो चुके हैं, उनकी शरण में बैठें और वे जो कहते हैं वह करें, तभी मैं आपको अपने घर में दाखिल होने दूँगा। सब समाज यही कहते हैं कि गुरु और नाम के बग़ैर न मुक्ति है और न ही हम परमात्मा के साथ जुड़ सकते हैं लेकिन जीवित महापुरुष की संगत में जाकर बहुत थोड़ी सी गिनती के भाग्यशाली जीव ही फ़ायदा उठाते हैं।

जब मालिक के प्यारे आते हैं तब हम लोग उनसे फ़ायदा नहीं उठाते, उन्हें कष्ट पहुँचाते हैं, उनकी निंदा करते है और बुरे वचन बोलते हैं। जब वे मालिक के प्यारे चले जाते हैं फिर हम उनके नाम पर समाज बना लेते हैं। वहाँ कोई जगह या समाधि बना लेते हैं, उसके आगे माथा टेकना शुरू कर देते हैं। मालिक फिर किसी और रूप में आते हैं और हम फिर रह जाते हैं। ऐसे लोगों के लिए गुरु साहब कहते हैं:

अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै।
अधविचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै।।

जब मालिक मौका देते हैं, महात्मा को भेजते हैं तब हम नाम लेने और उनका कहना मानने के लिए तैयार नहीं होते लेकिन उनके जाने के बाद हम उनकी टेक बाँध लेते हैं। फिर कहा काम नहीं आता, आप चाहे जो मर्ज़ी सिफ़त और कुर्बानी करते जाएं। मनमुख बीच में ही भटकता है और डावांडोल है, परमात्मा बातों से नहीं मिलते। जब महात्मा आते हैं तभी फ़ायदा उठाना होता है। गुरु साहब कहते हैं:

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै।
गुर बिन सुरति न सिधि गुरु बिनु मुकति न पावै।।

गुरु के बग़ैर सुरत अंदर नाम की तरफ़ नहीं जागती और अज्ञानता का अंधेरा दूर नहीं होता। पूरे गुरु के बग़ैर सचखंड जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता लेकिन नीचे के मंडलों में भी काल अंदर दाखिल नहीं होने देता। काल का भी यही कानून है कि पहले आप किसी गुरु से मिलें।

पुराणों में कहानी आती है कि वेदव्यास का लड़का सुखदेव मुनि था, उसे माता के पेट से ही स्वर्गों तक का ज्ञान था। वह जब स्वर्गों में गया तो विष्णु भगवान ने उसे वापिस भेज दिया कि पहले गुरु धारण करो। वह जब भी वहां जाता था और जहां भी बैठता था तो विष्णु भगवान उसके जाने के बाद उतनी जगह को खुदवाकर बाहर फेंक देते थे और उस जगह मिट्टी लाकर डाल देते थे।

वहाँ काम करने वालों को बहुत कष्ट हुआ कि एक निगुरा जब इस दरबार में आता है और हमें कितना कष्ट होता है। जब सुखदेव मुनि को पता चला तो उसने अपने पिता वेदव्यास जो कि योगेश्वर गति को प्राप्त थे, उनसे पूछा कि मैं आपका बेटा हूँ, क्या मेरे लिए भी गुरु धारण करना जरूरी है? वेदव्यास ने कहा कि बेटा, कानून सबके लिए एक समान है।

आपने कई बार यह कहानी सुनी है कि उसने पिता के कहने पर राजा जनक को गुरु धारण किया। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर राम कृष्ण से को बड़ा,तिन्हूं भी गुरु कीन्ह।
तीन लोक के नेह का, गुर आगै आधीन।।

राम और कृष्ण ब्रह्म के अवतार थे, यह मर्यादा उन्होंने भी पूरी की। आपके आगे ब्रह्मानंद जी का छोटा–सा शब्द रखा जा रहा है जो आप आमतौर पर सतसंग में बोलते हैं। ब्रह्मानंद जी पुष्कर(राजस्थान) में अच्छी कमाई वाले महात्मा हुए हैं। उन्होंने भी अपना तजुर्बा यही बताया है कि मालिक के दरबार में गुरु के बगैर कोई नहीं जा सकता। निचले मंडल–स्वर्ग और नरक काल ने रचे हैं। काल अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग देता है और बुरे ख्याल वालों को नरक देता है।

आप कहते हैं कि यहाँ का मसाला; माता–पिता और बहन–भाई जो भी यहाँ की सामग्री है, हमने ये सारी यहीं छोड़ जानी है। हम जिस तन में आए हैं, यह भी यहीं छोड़ जाना है।

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ।

गुरु तेग़ बहादुर साहब कहते हैं कि जो तन उपजा है, वह भी साथ नहीं जाना। आप ठंडे दिल से सोच लें, गुरु के बग़ैर आपकी वहाँ कोई सहायता नहीं कर सकता। स्वामी जी महाराज भी कहते हैं:

गुरु सेवा जो सदा सहाई, ताको ऐसी पीठ दिखाई।

गुरु की सेवा सदा ही सहायता करती है, हमने उसकी तरफ़ पीठ की हुई है बाकी दुनिया के कारोबार और इन्द्रियों के भोगों को पहल दी हुई है।

गुरु बिन कौन सहाई नरक में, गुरु बिन कौन सहाई रे।

ब्रह्मानंद जी कहते हैं कि जब मौत आती है तो घरवाले और भाई–बहन सारे ही आस–पास बैठे होते हैं लेकिन कोई हमारी मदद करने के लिए तैयार नहीं होता क्योंकि किसी को यह नहीं पता कि मौत का फ़रिश्ता आया कहां से और कान पकड़कर ले कहां गया? कबीर साहब कहते हैं:

आस पास जोधा खड़े, सबी बजावैं गाल।
मँझ महल से ले चला,ऐसा काल कराल।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि एक बूढ़ी औरत थी, उसकी लड़की बीमार हो गई। ऐसा हम सारे ही कह देते हैं कि परमात्मा हमें उठा लें और इसे ठीक कर दे। वह बूढ़ी औरत भी रोज यही कहा करती थी, ''मैंने बहुत खा–पी लिया है, आप मुझे उठा लें, इसने अभी दुनिया का कुछ नहीं देखा।'' एक दिन बाहर से एक गाय चरती हुई घर में आ गई। उसने इधर–उधर देखा लेकिन कुछ खाने को नहीं मिला। वहाँ एक बर्तन पड़ा था, गाय ने उसमें मुंह डाला तो वह बर्तन उसके मुँह में फँस गया। बर्तन का निचला हिस्सा काला होता है। जब उसका मुँह नहीं दिखा तो बूढ़ी औरत ने सोचा कि मौत का फ़रिश्ता आ गया, वह डरकर कहने लगी, ''देखो भई! मैं तो बूढ़ी हूँ जो बीमार है जिसे आपने लेकर जाना है, वह तो आगे पड़ी हुई है।'' महाराज जी कहा करते थे कि हम बाहर से तो जरूर हमदर्दी की बातें करते हैं लेकिन किसी की जगह जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

इसी तरह बाबा बिशनदास जी एक जोड़े का ज़िक्र किया करते थे। एक दिन तो हर एक ने साथ छोड़कर चले जाना है। पति चला गया, औरत ने सन्तों के पास जाकर कहा, ''मुझे उसके बग़ैर जीना अच्छा नहीं लगता, यही अच्छा होता अगर वह मुझे मौका देता तो मैं चली जाती।'' बातों ही बातों में वह कहने लगी कि महाराज जी आप कोई मंत्र वग़ैरह पढ़ें। शायद यह ठीक–ठाक हो जाए और इसकी जगह मैं चली जाऊं।

सन्त दिलों की जानते हैं, उन्होंने पानी में कोई मंत्र पढ़ा और कहने लगे, ''मैंने मंत्र पढ़ दिया है जो भी इस पानी को पिएगा, वह जरूर इसकी जगह मर जाएगा और ये उठकर खड़ा जाएगा।'' उसकी माता और बहन–भाइयों से पूछा। बातें तो हम सारे ही करते हैं पर कोई वह पानी पीने के

लिए तैयार नहीं हुआ। उन्हें यह भी यकीन था कि सन्त जो कहते हैं वह ज़रूर होगा। उस औरत से कहा कि देख, तेरा तो यह पति है, तेरा इससे कितना प्यार है तू यह पानी पी ले। उस औरत ने और परिवार के सब लोगों ने इंकार कर दिया। कहने का भाव यही है कि हम ऊपर से सारे एक–दूसरे को विश्वास दिलाते हैं कि हम तेरे हैं लेकिन मौत के मुँह में जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

मात–पिता सुत बंधव नारी, स्वार्थ के सब भाई रे।।
परमार्थ का बंधु जगत में, सतगुरु बंध छुड़ाई रे।।

आप प्यार से कहते हैं कि माता–पिता और भाई–बहन सब स्वार्थ के कारण साथ हैं। जितने दिन इनका स्वार्थ पूरा होता है, उतने दिन हमारे साथ प्यार है। जब यह देखते हैं कि अब ये बूढ़ा हो गया है या बीमार हो गया है, अब ये हमसे कुछ माँगेगा तब उनका जोश ठंडा पड़ जाता है। परमार्थ में विघ्न डालने वाली ये शक्तियां काल ने पैदा की हुई हैं लेकिन सतगुरु हमें इन बंधनों से आज़ाद करवाने के लिए आते हैं।

सन्त हमें सतसंग के ज़रिए कहते हैं कि देख प्यारेया, ये मीठे ठग हैं, इनसे सावधान रहें। महात्मा यह भी नहीं कहते कि जो ड्यूटी मिली है उसे छोड़कर कहीं चले जाओ। महात्मा कहते हैं कि इनकी सच्चाई को समझकर देखें। गुरु तेग़ बहादुर जी महाराज कहते हैं:

जगत मै झूठी देखी प्रीति, अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत।।

भवसागर जल दुस्तर भारी, गर्भ से दुःख दाई रे।
गुरु खेवटिया पार लगा के, ज्ञान जहाज बिठाई रे।।

महात्मा कहते हैं कि ठंडे दिल से सोचकर देखें जिसे हम सुखों की नगरी समझते हैं, यहाँ कोई सुखी नजर नहीं आता। जीव जितना माता के पेट में दुखी है यहाँ उससे भी ज़्यादा तकलीफें हैं। इस समुन्द्र के न इस

किनारे का पता है, न उस किनारे का पता है और न ही इसकी गहराई का पता है। सतगुरु ही हैं जो हमें नाम के जहाज़ में बैठाकर पार ले जाते हैं।

जन्म-जन्म का मेट अंधेरा, संसा सकल नसाई रे।
पारब्रह्म परमेश्वर पूर्ण, घट में दे दिखाई रे।।

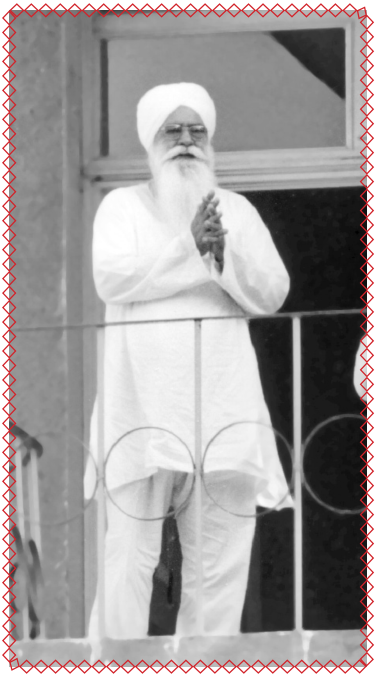

आप प्यार से कहते हैं कि जब हम सन्तों की शिक्षा के मुताबिक़ अपने ख्याल को नौ द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे जाते हैं तो हमारा जन्म-जन्मांतर का अज्ञानता का अंधेरा खत्म हो जाता है। वहाँ पता चलता है कि हम कितनी प्रलय और महाप्रलय से गुज़र चुके हैं, हमने कितने जन्म धारण किए और हमारी क्या हालत रही। जीव को वह सारा ज्ञान हो जाता है। हम जिस परमात्मा को जंगलों-पहाड़ों, मंदिर-मस्जिदों और पवित्र ग्रंथों में ढूंढते थे, सन्तों ने हमें वे प्रभु हमारे ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर घट में ही दिखा दिए।

गुरु के वचन धार हिरदे में, भाव भक्ति मन लाई रे।
ब्रह्मानंद करो नित सेवा, मोक्ष पदार्थ पाई रे।।

सबसे पहले सन्त हमें जो रास्ता बताते हैं, हमने उस पर चलना है और 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

गुरु का मुख

24 नवम्बर 1995 सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. आश्रम (राज.)

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं कि हमारे और गुरुमुखों के कारज में बहुत फर्क होता है। गुरुमुख जो भी दुनियावी काम करते हैं उनकी नजर मुसाफिरों की तरह होती है। वे मकान और जायदाद बनाते समय यह नहीं सोचते कि हमें यहाँ सदा ही रहना है या हमारे पुत्र-पौत्रे इसे खाएंगे।

बाबा जयमल सिंह जी महाराज सावन सिंह जी से कहा करते थे, ''देख भई, यह जैसे-जैसे बड़ाई प्राप्त करता है वैसे-वैसे अपने से गरीबों को खाना शुरु कर देता है। यह धन जोड़कर रख जाता है या तो वह धन उसके होते हुए ही बर्बाद हो जाता है या उसका कोई बेटा या पौत्र उस धन को उड़ा देता है लेकिन लेखा तो वही देगा।''

आप कहते हैं कि मालिक के प्यारे **गुरु का मुख** बन जाते हैं, वे सदा ही काम करते हुए यह सोचते हैं कि मैंने तो चले जाना है। कल आपको गुरु गोबिंद सिंह जी की कहानी बताई थी कि जो सिख रासधारियों के पास गए थे, वे तो वहाँ खड़े हुए ही गुरु से डर रहे थे कि अगर गुरु साहब जाग गए तो वे हमें सिखी से खारिज कर देंगे लेकिन जो सिख पहरे पर खड़े थे, उनके मन रासधारियों के पास थे।

गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ।।

मैं कई समाजों में रहा हूँ, मैं निहंगों में भी काफी समय रहा हूँ। निहंगों का अजीब ही ख्याल होता है वे मस्त होते हैं। मैं जब निहंग बना तो उस समय की कई कहानियां बताया करता हूँ। उस समय मेरे सिर के ऊपर पैंतिस किलो की पगड़ी होती थी, एक प्रेमी सेवादार रखा हुआ था। कुर्सी की बजाए पीछे लकड़ियों की गठरी रखते थे क्योंकि इतनी भारी पगड़ी पहनकर बैठा नहीं जा सकता था। उस समय एक बूढ़ा निहंग जूते पहनकर ही कीकर के पेड़ पर दातुन तोड़ने के लिए चढ़ गया। वहाँ से गुजरने वाले लोगों ने कहा, ''बाबा, जूते तो नीचे उतार जाता अगर पैर फिसल गया तो चोट लग जाएगी।'' उस निहंग ने कहा, ''अगर ऊपर से ही भगवान मुझे अपने पास बुला लें तो क्या मैं जूते पहनने नीचे आऊंगा।''

मैं अंग्रेजों को भी सुनाया करता हूँ कि जो सेवक कमाई करते हैं, उनकी इस तरह की तैयारी होती है।

प्यारेयो, जो मालिक के प्यारे भजन करते हैं, वे जब शरीर छोड़ते हैं तो दरगाह में उनका मान होता है। उन्हें लेने के लिए उनके गुरुदेव परमात्मा आते हैं, उन्हें इस तरह गले लगा लेते हैं जिस तरह बेटी आकर अपने पिता के गले लग जाती है। आप देख लिया करें कि किस तरह बेटियां आकर पिता के गले लग जाती हैं। ✻✻✻

धन्य अजायब

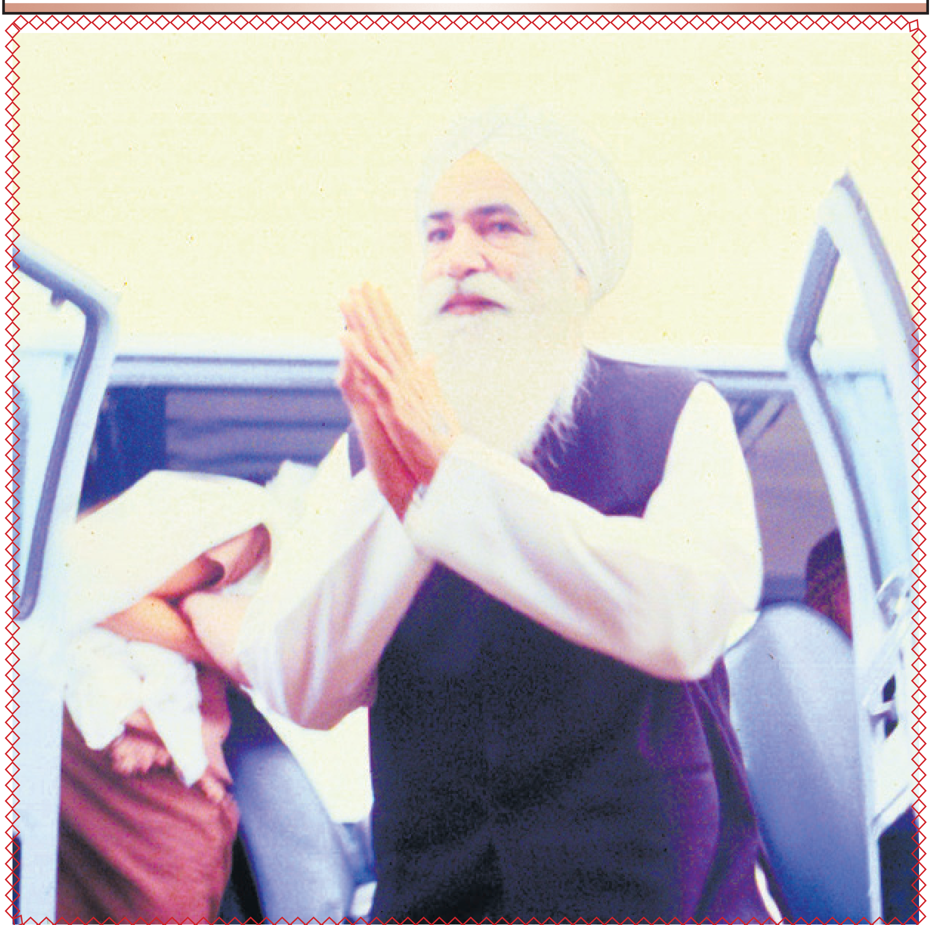

सतसंग के कार्यक्रम

अहमदाबाद	जयपुर	16 पी.एस.आश्रम
04 से 06 जुलाई 2025	01 से 03 अगस्त 2025	07 से 12 सितम्बर 2025

RNI No - RAJHIN/2003/9899

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप जिसे याद करते हैं, पुकारते हैं वह आपको जरूर मिलेगा। कुदरत का उसूल है कि भूखे को रोटी और प्यासे को पानी जरूर देती है।'' अगर अब हम परमात्मा के आगे फरियाद करेंगे कि हम फिर-फिर के थक चुके हैं, अब हमें अपनी भक्ति और नाम का दान बक्शें। वे जरूर दया-मेहर करके हमें अपने चरणों में जगह देते हैं, अपनी भक्ति बक्शते हैं।